Namaz Se
Tawajjo Hatane wali Chizen (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 363
Weekly Booklet : 363

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब "फ़ैज़ाने नमाज़" की
एक क़िस्त बनाम

नमाज़

से तवज्जोह हटाने वाली चीज़ें

सफ़हात 15

क्या लिबास का असर
दिल पर होता है ? 02
परिन्दे पालना कैसा ? 05
रोज़ी में बरकत का मज़बूत ज़रीआ 08
बन्दा रक्अतें क्यूं भूलता है ? 09

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

नमाज़ से तवज्जोह हटाने वाली चीज़ें[1]

दुआए अ़त्तार : या **अल्लाह** पाक ! जो कोई 15 सफ़्हात का रिसाला : **"नमाज़ से तवज्जोह हटाने वाली चीज़ें"** पढ़ या सुन ले उसे ख़ूब तवज्जोह के साथ नमाज़ पढ़ने की सआ़दत दे और उस की मां बाप समेत बे हिसाब बख़्शिश फ़रमा। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** नमाज़ के बा'द हम्दो सना और दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले से फ़रमाया : "दुआ मांग क़बूल की जाएगी, सुवाल कर, दिया जाएगा।" (نسائی، ص220، حدیث:1281)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

डिज़ाइन वाली चादर में नमाज़ ?

"**बुख़ारी शरीफ़**" में है : उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا से रिवायत है कि मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़मीसा (या'नी नक़्शो निगार वाली) चादर में **नमाज़** पढ़ी, उस के नक़्शो निगार (या'नी डिज़ाइन) पर एक नज़र डाली, जब फ़ारिग़ हुए तो फ़रमाया : "मेरी येह चादर अबू जह्म के पास ले जाओ और अबू जह्म से अम्बिजानिय्या की चादर ले आओ, क्यूं कि इस (डिज़ाइन वाली) चादर ने अभी मुझे **नमाज़** से बाज़ रखा।" एक रिवायत में यूं भी है कि "मैं **नमाज़** में इस के नक़्शो निगार (या'नी डिज़ाइन) देखने लगा तो मुझे ख़ौफ़ है कि येह मेरी **नमाज़** ख़राब कर दे।" (بخاری، 1/149، حدیث:373)

---

1 ... येह मज़्मून अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब "फ़ैज़ाने नमाज़" सफ़्हा 298 ता 309 से लिया गया है।

लिबास का असर दिल पर होता है

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : अ़रबी में ख़मीसा बेल बूटे (या'नी डिज़ाइन) वाली चादर को कहते हैं, येह ऊनी सियाह चादर थी जो अबू जह्म (رَضِیَ اللهُ عَنْه) ने हदिय्यतन (या'नी बत़ौरे Gift) ख़िदमते अक़्दस में पेश की थी, इस को ओढ़ कर सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **नमाज़** पढ़ रहे थे। अम्बिजानिय्या शाम (या'नी सूरिया) की एक बस्ती का नाम है जहां सादा कपड़े तय्यार होते हैं उसी की त़रफ़ इस की निस्बत है। जैसे हमारे हां भागल पूरिया, ढाका की मलमल या लाइल पूर का लठ्ठा मश्हूर है। चूंकि चादर का वापस करना अबू जह्म (رَضِیَ اللهُ عَنْه) को ना गवार गुज़रता, उन की दिलदारी (या'नी दिलजूई) के लिये उस के इ़वज़ (या'नी बदले) दूसरी चादर त़लब फ़रमा ली। सूफ़िया फ़रमाते हैं कि **लिबास का असर दिल पर होता है, ख़ुसूसन साफ़ और रोशन दिल जल्दी असर लेते हैं,** जैसे सफ़ेद कपड़े पर सियाह धब्बा मा'मूली भी (हो तो) दूर से चमक्ता है। इस से मा'लूम हुवा कि मेह़राबे मस्जिद सादा होना बेहतर है ताकि नमाज़ी का ध्यान न बटे। बा'ज़ सूफ़िया नक़्शो निगार वाले मुसल्ले की बजाए **सादा चटाई** पर नमाज़ बेहतर समझते हैं, उन का माख़ज़ (या'नी बुन्याद) येही ह़दीस है। ख़याल रहे कि येह सब अपनी उम्मत की ता'लीम के लिये है, क़ल्बे पाके मुस्त़फ़ा (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की वारिदात (या'नी मुबारक दिल पर गुज़रने वाली कैफ़िय्यात) मुख़्तलिफ़ हैं। कभी कपड़े के बेल बूटे (या'नी डिज़ाइन) से ख़ुज़ूअ़ ख़ुशूअ़ कम होने का अन्देशा (या'नी डर) होता है और कभी मैदाने जंग में तलवारों के साए में **नमाज़** पढ़ते हैं और **ख़ुशूअ़** में कोई

फ़र्क़ नहीं आता, कभी बशरिय्यत का ज़ुहूर है और कभी नूरानिय्यत की जल्वा गरी। (मिरआतुल मनाजीह, 1/466 मुल्तक़त़न)

डिज़ाइन वाले लिबास में नमाज़ जाइज़ है

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! इस से कोई येह न समझे कि रंगीन या डिज़ाइन वाले लिबास में **नमाज़** पढ़ना ही ना जाइज़ है ! मस्अला येह है कि लिबास का डिज़ाइन हो या जेब में कोई वज़्नी चीज़ या कोई सी भी शै जो **नमाज़** के **ख़ुशूअ़** में रुकावट डाले उस से बचना बेहतर और कारे सवाब है।

नए ना'लैने शरीफ़ैन

हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक बार नए ना'लैने शरीफ़ैन या'नी मुबारक जूतियों को पहना, वोह आप को अच्छी लगीं तो सज्दए शुक्र किया और इर्शाद फ़रमाया : मैं ने अपने रब के सामने आ़जिज़ी की ताकि वोह मुझ पर ग़ज़ब नाक न हो। फिर आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ ले गए और सब से पहले मिलने वाले साइल (या'नी मंगता) को वोह ना'लैने शरीफ़ैन अ़ता फ़रमा दिये। फिर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللهُ عَنْه से इर्शाद फ़रमाया : "मेरे लिये पुराने नर्म चमड़े के ना'लैन (या'नी जूते) ख़रीद लो।" फिर उन्हें पहना। (एह़याउल उ़लूम (उर्दू), 1/509)

सोने की अंगूठी

मर्दों के लिये सोना ह़राम होने से पहले मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हाथ मुबारक में सोने की एक अंगूठी थी, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नूरानी मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा थे कि अंगूठी उतार दी और इर्शाद फ़रमाया : "इस ने मुझे मश्ग़ूल कर दिया, मेरी एक नज़र इस की त़रफ़ रही और एक नज़र तुम्हारी (या'नी ह़ाज़िरीन की) त़रफ़।" (एह़याउल उ़लूम (उर्दू), 1/509)

सोना मर्द के लिये ह़राम

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! पहले सोना मर्दों के लिये जाइज़ था मगर बा'द में ह़राम कर दिया गया । चुनान्चे ह़ज़रते मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सीधे हाथ में रेशम लिया और बाएं (या'नी Left) हाथ में सोना फिर येह फ़रमाया कि "येह दोनों चीज़ें मेरी उम्मत के मर्दों पर ह़राम हैं ।" (ابوداود، 4/71، حدیث:4057) (बहारे शरीअ़त, 3/424)

सोने की अंगूठी फेंक दी (वाक़िआ़)

हम सब के प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स के हाथ में सोने की अंगूठी देखी तो उस को उतार कर फेंक दिया और येह फ़रमाया कि "क्या कोई अपने हाथ में अंगारा रखता है !" जब हुज़ूरे अकरम (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) तशरीफ़ ले गए, किसी ने उन से कहा : अपनी अंगूठी उठा लो, और किसी काम में लाना । उन्हों ने कहा : ख़ुदा की क़सम ! मैं उसे कभी न लूंगा, जब कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे फेंक दिया । (مسلم، ص891، حدیث:5472)

हर सह़ाबिये नबी जन्नती जन्नती

सब सह़ाबियात भी जन्नती जन्नती

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

परिन्दे की मह़ब्बत का वबाल (वाक़िआ़)

एक आ़बिद (या'नी इ़बादत गुज़ार बन्दे) ने किसी जंगल में त़वील (या'नी लम्बे) अ़र्से तक **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** की इ़बादत की । उस ने एक मरतबा किसी परिन्दे को दरख़्त के अन्दर अपने घोंसले में चह्चहाता देख कर दिल में कहा : क्या ही अच्छा हो जो मैं इ़बादत के लिये इस दरख़्त के क़रीब जगह बना लूं ताकि इस परिन्दे की आवाज़ से उन्स या'नी प्यार

(Affection) पाता रहूं। फिर उस ने ऐसा कर लिया, तो **अल्लाह** पाक ने उस वक़्त के नबी عَلَيْهِ السَّلَام पर वही नाज़िल फ़रमाई : फ़ुलां आ़बिद (या'नी इ़बादत गुज़ार) से कह दो : "तुम मख़्लूक़ से मानूस हुए (या'नी प्यार ह़ासिल किया) मैं ने तुम्हारा दरजा ऐसा कम कर दिया है कि अब किसी भी अ़मल से उसे नहीं पा सकोगे।" (एह़याउल उ़लूम (उर्दू), 5/121)

परिन्दे पालना कैसा ?

ऐ आ़शिक़ाने नमाज़ ! परिन्दे वग़ैरा पालना जाइज़ है। मगर इन कामों में ऐसी मश्ग़ूलिय्यत मुनासिब नहीं जो नमाज़ों के ख़ुशूअ़ और दीगर इ़बादात के अन्दर दिल जम्ई में रुकावट बने। और येह ज़रूरी है कि दाना पानी वग़ैरा इस कसरत से दीजिये कि किसी त़रह़ भी आप की वज्ह से उन को भूक व प्यास की तक्लीफ़ न पहुंचे। **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : "(जानवर को) दिन में सत्तर (70) दफ़्आ़ (या'नी बहुत ज़ियादा मरतबा दाना) पानी दिखाए। वरना पालना और भूका प्यासा रखना सख़्त गुनाह है।" (फ़तावा रज़विय्या, 24/644) जानवर पर हर त़रह़ के ज़ुल्म से बचना ज़रूरी है कि जानवर पर ज़ुल्म करना मुसल्मान पर ज़ुल्म करने से भी बड़ा गुनाह है। मुसल्मान मुक़द्दमा वग़ैरा दाइर कर सकता है मज़लूम जानवर बेचारा किस को फ़रियाद करेगा ! येह भी याद रहे ! कि मज़लूम जानवर की बद दुआ़ मक़्बूल होती है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

सह़ाबी ने बाग़ सदक़ा कर दिया (वाक़िआ़)

ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा अन्सारी رَضِیَ اللهُ عَنْه अपने बाग़ में **नमाज़** पढ़ रहे थे, यकायक ख़ाकी रंग का एक कबूतर उड़ा और बाहर निकलने के

रास्ते की तलाश में इधर उधर घूमने लगा, आप को येह मन्ज़र अच्छा लगा, लम्हे भर के लिये अपनी नज़र उसी त़रफ़ लगा दी, फिर जब **नमाज़** की त़रफ़ मुतवज्जेह हुए तो याद न रहा कि कितनी रक्अ़तें हुई हैं ! आप ने फ़रमाया : मेरे माल (या'नी बाग़) ने मुझे आज़्माइश में डाल दिया ! चुनान्चे **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और वाक़िआ़ बयान करने के बा'द अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अब वोह बाग़ सदक़ा है, जहां चाहें उसे ख़र्च फ़रमाएं। (موطاامام مالک، 1/107، حدیث:225)

ताबेई ने बाग़ सदक़ा कर दिया (वाक़िआ़)

एक ताबेई बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने अपने खजूरों के बाग़ में **नमाज़** अदा की, खजूर के दरख़्त फलों (की कसरत की वज्ह) से झुके हुए थे, उन पर नज़र पड़ी तो उन को भले लगे और याद न रहा कि कितनी रक्अ़तें पढ़ी हैं ! उन्हों ने येह वाक़िआ़ मुसल्मानों के तीसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه की ख़िदमत में बयान किया और अ़र्ज़ की : अब वोह बाग़ सदक़ा है उसे **अल्लाह** पाक की राह में ख़र्च कर दीजिये। चुनान्चे उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने उसे 50 हज़ार में बेच दिया। (एह़याउल उ़लूम (उर्दू), 1/510)

दोस्त की नाराज़ी का ख़ौफ़ मगर....

ऐ जन्नत के त़लब गारो ! देखा आप ने ! सह़ाबिये रसूल और ताबेई बुज़ुर्ग की नमाज़ के **ख़ुशूअ़** में उन के बाग़ रुकावट बने तो उन्हें राहे ख़ुदा में ख़ैरात कर दिया गया ! سُبْحٰنَ اللّٰه ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन का **नमाज़** के साथ कैसा ज़बर दस्त लगाव था और आह ! आज हमारी ह़ालत है कि अक्सरिय्यत **नमाज़** ही को भुला बैठी है ! अज़ान के ज़रीए पांचों वक़्त **नमाज़** के लिये बुलावे मिलते हैं मगर एह़सास तक नहीं होता ! अगर किसी

को मुल्क का सद्र या कोई वज़ीर दा'वत नामा भेज दे तो उस की ख़ुशी की इन्तिहा न रहे, लोगों में उस दा'वत का ख़ूब ख़ूब तज़्किरा करता फिरे कि फ़ुलां तारीख़ को मैं फ़ुलां वज़ीर की दा'वत में जाऊंगा। अफ़्सोस ! दुन्यवी हुक्मरान की दा'वत तो बाइसे फ़ख़्र ठहरे मगर **नमाज़** की दा'वत देने वाला (या'नी मुअज़्ज़िन) दरबारे इलाही की हाज़िरी के लिये मस्जिद की त़रफ़ बुलाए तो इस की कोई परवा न की जाए। अगर कोई अ़ज़ीज़ या दोस्त शादी बियाह या किसी दूसरी तक़रीब की दा'वत दे तो मूड न होने के बा वुजूद भी उस की दा'वत क़बूल कर ली जाती है क्यूं कि बसा अवक़ात येह डर होता है कि दा'वत क़बूल न करना कहीं उस की नाराज़ी का सबब न बन जाए ! मगर कभी आप ने येह सोचा कि मुअज़्ज़िन की पुकार : حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃ या'नी ''आओ **नमाज़** की त़रफ़'' सुन कर अगर दा'वते **नमाज़** क़बूल न की तो पाक परवर्दगार नाराज़ हो जाएगा ! याद रखिये

पढ़ते हैं जो नमाज़ वोह जन्नत को पाएंगे

जो बे नमाज़ हैं वोह जहन्नम में जाएंगे

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

ख़ुशूअ़ वाली नमाज़ ग़म दूर करती है

दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की 103 सफ़ह़ात की किताब ''राहे इल्म'' के सफ़ह़ा 87 पर है : त़ालिबे इल्म के लिये मुनासिब नहीं है कि वोह दुन्यावी उमूर (या'नी दुन्या के मुआ़मलात) के बारे में फ़िक्रो ग़म करे क्यूं कि दुन्यावी उमूर की फ़िक्र करना सरासर नुक़्सान देह है और इस का कोई फ़ाएदा नहीं क्यूं कि फ़िक्रे दुन्या दिल की सियाही का मूजिब (या'नी सबब) होती है, जब कि फ़िक्रे आख़िरत तो नूरे क़ल्ब का बाइस

होती है और इस नूर का असर **नमाज़** में ज़ाहिर होता है, (क्यूं) कि दुन्या का ग़म उसे ख़ैर (या'नी भलाई के कामों) से मन्अ़ कर रहा होता है जब कि आख़िरत की फ़िक्र उस को कारे ख़ैर (या'नी अच्छे कामों) की त़रफ़ उभार रही होती है। येह भी याद रहे कि **नमाज़ को ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ के साथ अदा करना और तह़सीले इल्म** (या'नी इल्मे दीन ह़ासिल करने) **में लगे रहना फ़िक्र व ग़म को दूर कर देता है।** (राहे इल्म, स. 87)

ग़मे रोज़गार में तो मेरे अश्क बह रहे हैं तेरा ग़म अगर रुलाता तो कुछ और बात होती

(वसाइले बख़्शिश, स. 384)

रोज़ी में बरकत का मज़बूत़ ज़रीआ़

इसी "राहे इल्म" के सफ़ह़ा 92 पर है : **रिज़्क़ की वुस्अ़त** का क़वी या'नी रोज़ी में बरकत का मज़बूत़ तरीन ज़रीआ़ येह है कि इन्सान **नमाज़** को **ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़**, ता'दीले अरकान (या'नी अरकाने नमाज़ ठहर ठहर कर अदा करने) का लिह़ाज़ करते हुए और तमाम वाजिबात और सुननो आदाब की पूरी त़रह़ रिआ़यत करते हुए अदा करे। (राहे इल्म, स. 92)

बड़ी उ़म्र पाने के 10 अस्बाब

वोह चीज़ें जो उ़म्र में ज़ियादती का सबब बनती हैं, वोह येह हैं : ﴾1﴿ नेकी करना ﴾2﴿ मुसल्मानों को ईज़ा न देना ﴾3﴿ बुज़ुर्गों का एह़तिराम करना ﴾4﴿ सिलए रेह़मी (या'नी रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक) करना ﴾5﴿ हर रोज़ सुब्ह़ो शाम इन कलिमात को तीन तीन बार पढ़ना : سُبْحٰنَ اللّٰهِ مِلْءَ الْمِيْزَانِ وَ مُنْتَهَى الْعِلْمِ وَ مَبْلَغَ الرِّضَا وَزِنَةَ الْعَرْشِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ، وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ، وَاللّٰهُ اَكْبَرُ مِلْءَ الْمِيْزَانِ وَ مُنْتَهَى الْعِلْمِ وَ مَبْلَغَ الرِّضَا وَزِنَةَ الْعَرْشِ ﴾6﴿ बिला ज़रूरत हरे भरे दरख़्तों को काटने से बचना ﴾7﴿ पूरे त़रीक़े से

सुननो आदाब का लिहाज़ रखते हुए वुज़ू करना ﴾8﴿ **नमाज़ ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ से पढ़ना** ﴾9﴿ एक ही एह़राम से ह़ज व उ़म्रह अदा करना या'नी ह़ज्जे क़िरान करना ﴾10﴿ अपनी सिह्ह़त का ख़याल रखना। येह तमाम बातें उ़म्र में ज़ियादती का सबब बनती हैं। (राहे इल्म, स. 95 ब तग़य्युरे क़लील)

बन्दा रक्अ़तें क्यूं भूलता है ?

ग़ैब की ख़बरें बताने वाले प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जब अज़ान होती है तो शैत़ान पीठ फेर कर गूज़ मारता हुवा भागता है ताकि अज़ान न सुन सके, अज़ान के बा'द फिर आ जाता है। और जब "इक़ामत" होती है तो फिर भाग जाता है, इक़ामत के बा'द आ कर नमाज़ी को वस्वसा डालना शुरूअ़ कर देता है और उस की भूली हुई बातों के बारे में कहता है : फ़ुलां बात याद कर, फ़ुलां बात याद कर ह़त्ता कि नमाज़ी को याद नहीं रहता कि उस ने कितनी रक्अ़त पढ़ी हैं ?" (بخاری، 1/222، حدیث:608)

अज़ान में शैत़ान दूर करने की तासीर है

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : यहां शैत़ान के भागने के ज़ाहिरी मा'ना ही मुराद हैं और अज़ान में दफ़्ए़ शैत़ान की तासीर है, इसी लिये त़ाऊ़न (Plague) फैलने पर अज़ान कहलवाते हैं कि येह वबा जिन्नात के असर से है। बच्चे के कान में अज़ान देते हैं कि उस की पैदाइश पर शैत़ान मौजूद होता है जिस की मार से बच्चा रोता है। दफ़्न के बा'द क़ब्र के सिरहाने अज़ान दी जाती है क्यूं कि वोह मय्यित के इम्तिह़ान और शैत़ान के बहकाने का वक़्त है, इस (या'नी अज़ान) की बरकत से शैत़ान भागेगा, नीज़ मय्यित के दिल को सुकून होगा, नए घर में दिल लग जाएगा, नकीरैन (या'नी मुन्कर

नकीर) के सुवालात के जवाबात याद आ जाएंगे। (मिरआतुल मनाजीह़, 1/ 409) (क़ब्र पर अज़ान देने के मुतअ़ल्लिक़ तफ़्सीली मा'लूमात के लिये "**फ़तावा रज़विय्या**" (मुख़र्रजा) जिल्द 5 में मौजूद रिसाले "اِیْذَانُ الْاَجِرِفِیْ اَذَانِ الْقَبْرِ" का मुत़ालआ़ कीजिये)

नमाज़ में भूली हुई बातें याद आ जाती हैं

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान साहिब आगे चल कर मज़ीद फ़रमाते हैं : तजरिबा है कि **नमाज़** में वोह बातें याद आती हैं जो **नमाज़** के बाहर याद नहीं आतीं। इस से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** पाक ने शैत़ान को इन्सानों के दिलों पर तसर्रुफ़ करने की क़ुदरत दी है इन्सानों की आज़्माइश के लिये, कितनी ही कोशिश की जाए मगर इन वस्वसों से कुल्ली (या'नी मुकम्मल त़ौर पर) नजात नहीं मिलती। चाहिये कि वस्वसों की परवा न करे, **नमाज़** पढ़ता रहे, मख्खियों की वज्ह से खाना न छोड़े। (मिरआतुल मनाजीह़, 1/ 410)

शैत़ान ने ख़ज़ाने का पता बता दिया ! (वाक़िआ़)

एक शख़्स माल दफ़्न कर के भूल गया और ह़ज़रते इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ की ख़िदमते बा बरकत में ह़ाज़िर हुवा, आप ने फ़रमाया : रात भर नफ़्ल नमाज़ पढ़ो, तुम्हें याद आ जाएगा, उस शख़्स ने नमाज़ पढ़ना शुरूअ़ की अभी चन्द रक्अ़ात ही पढ़ी थीं कि उसे याद आ गया (तो उस ने नफ़्ल नमाज़ ख़त्म कर दी) फिर इमामे आ'ज़म رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर येह वाक़िआ़ बयान किया। आप ने फ़रमाया : मुझे मा'लूम था कि शैत़ान तुझे रात भर नमाज़ न पढ़ने देगा और तुझे तेरा माल याद दिला देगा ताकि तू नमाज़ छोड़ दे। (الخیرات الحسان، ص71 ملخصاً)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! इस वाक़िए़ से येह ज़ाहिर होता है कि इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ के हुक्म के मुत़ाबिक़ उस शख़्स ने रिज़ाए

इलाही के लिये ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ के साथ नफ़्ल पढ़े थे और उस का काम बन गया । येह याद रखिये ! जब कभी किसी दुन्यवी काम के लिये विर्दो वज़ीफ़ा करें उस में सवाब की निय्यत भी करनी चाहिये, मसलन रोज़ी में बरकत, बीमारी से शिफ़ा, क़र्ज़ की अदाएगी, औलाद होने या रिश्ता मिलने वग़ैरा के लिये दा'वते इस्लामी के क़ाफ़िले में सफ़र करें या कोई विर्दो वज़ीफ़ा करें तो **अल्लाह** पाक की रिज़ा पाने की निय्यत ज़रूर करें **अल्लाह** करीम चाहे तो काम भी बन जाएगा । इसी त़रह़ सलातुल ह़ाजत वग़ैरा की अदाएगी भी सवाब की निय्यत से करनी चाहिये ।

रक्अ़तों की गिनती भूल जाए तो क्या करे ?

"**बहारे शरीअ़त**" में है : ❀ जिस को शुमारे रक्अ़त में शक हो, मसलन तीन हुईं या चार और बुलूग़ (या'नी बालिग़ होने) के बा'द येह पहला वाक़िआ़ है तो सलाम फेर कर या कोई अ़मल मुनाफ़िये नमाज़ (या'नी ख़िलाफ़े नमाज़) कर के तोड़ दे या ग़ालिब गुमान के ब मूजिब (या'नी मुत़ाबिक़) पढ़ ले मगर बहर सूरत उस **नमाज़** को (नए) सिरे से पढ़े । महज़ तोड़ने की निय्यत काफ़ी नहीं (या'नी नमाज़ तोड़ने का अ़मल करना होगा) और अगर येह शक पहली बार नहीं बल्कि पेश्तर (या'नी इस से पहले) भी हो चुका है तो अगर ग़ालिब गुमान किसी त़रफ़ हो तो उस पर अ़मल करे वरना कम की जानिब को इख़्तियार करे या'नी तीन और चार में शक हो तो तीन क़रार दे, दो और तीन में शक हो तो दो, وَعَلٰى هٰذَا الْقِيَاس (या'नी और इसी त़रह़) और तीसरी चौथी दोनों में क़ा'दा करे कि तीसरी रक्अ़त का चौथी होना मोह़तमल (या'नी तीसरी के चौथी होने का इम्कान) है और चौथी में क़ा'दे के बा'द सज्दए सह्व कर के सलाम फेरे और गुमाने

ग़ालिब की सूरत में सज्दए सह्व नहीं मगर जब कि सोचने में ब क़दर एक रुक्न (या'नी तीन बार سُبْحٰنَ اللّٰه कहने की मिक़्दार) के वक़्फ़ा किया हो तो सज्दए सह्व वाजिब हो गया ❀ **नमाज़** पूरी करने के बा'द शक हुवा तो इस का कुछ ए'तिबार नहीं और अगर **नमाज़** के बा'द यक़ीन है कि कोई फ़र्ज़ रह गया मगर इस में शक है कि वोह क्या है तो फिर से पढ़ना फ़र्ज़ है।

(बहारे शरीअ़त, 1/718)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

वोह इन्टरनेट का ग़लत़ इस्ति'माल किया करते थे

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! वुज़ू, ग़ुस्ल और नमाज़ के मसाइल सीखने का जज़्बा पाने, अपने अन्दर ख़ौफ़े ख़ुदा बढ़ाने, गुनाहों से पीछा छुड़ाने और ख़ुद को जन्नत के रास्ते पर चलाने का ज़ेह्न बनाने के लिये आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, **''दा'वते इस्लामी''** के दीनी माह़ोल से वाबस्ता रहिये। तरग़ीब के लिये एक **मदनी बहार** सुनिये : चुनान्चे एक इस्लामी भाई ने रात दिन गुनाहों का बाज़ार गर्म कर रखा था, स्नोकर, डबो, क्रिकेट वग़ैरा में जूआ खेलते, बुरे दोस्तों के साथ मिल कर फ़िल्में ड्रामे देखते और ज़ाती कम्पयूटर पर शर्मनाक फ़िल्में देखा करते थे। वक़्ते बयान से कमो बेश चार या पांच साल पहले की बात है कि एक बार इन्टरनेट इस्ति'माल कर रहे थे और मुख़्तलिफ़ वेब साइट्स खोल रहे थे कि अचानक ही एक बयान ऑन लाइन हुवा। वोह आगे बढ़ना ही चाहते थे कि बयान करने वाले के अन्दाज़ ने उन के हाथ रोक दिये, वोह बयान सुनने लग गए, मुबल्लिग़ ख़ौफ़े ख़ुदा दिला रहे थे। दौराने बयान येह भी अपने गुनाहों को याद कर के नादिम होने लगे, वोह येह बयान सुन कर मुतअस्सिर

हुए। मज़ीद मा'लूमात कीं तो पता चला कि येह बयान **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में हो रहा था। اَلْحَمْدُ لِلّٰه उसी इज्तिमाअ़ में ग़ौसे पाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का मुरीद बनने के बा'द गुनाहों से हिफ़ाज़त के लिये दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल से वाबस्ता हो गए, यूं उन्हें तौबा की सआ़दत मिल गई। इस के इ़लावा भी उन्हों ने **दा'वते इस्लामी** की बरकतें देखी हैं मसलन एक मरतबा उन्हों ने ख़्वाब में देखा कि मस्जिदे नबवी शरीफ़ में मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान) लगा हुवा है और इस्लामी भाई क़ुरआने करीम पढ़ रहे हैं। एक मरतबा देखा कि **मस्जिदे नबवी** में दा'वते इस्लामी का हफ़्तावार सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ हो रहा है और एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी बयान फ़रमा रहे हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه अ़लाक़ाई सत्ह़ पर **इस्लाहे़ आ'माल** की ज़िम्मेदारी भी मिली और कमो बेश ग्यारह माह से इस्तिक़ामत के साथ हर माह **मदनी क़ाफ़िले** में सफ़र की सआ़दत भी नसीब हो रही है।

तेरा शुक्र मौला दिया दीनी माह़ोल न छूटे कभी भी ख़ुदा दीनी माह़ोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 647)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

दुन्या से जाने वाले की त़रह़ नमाज़ पढ़े

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जब तुम में से कोई **नमाज़** पढ़े तो रुख़्सत होने वाले शख़्स की त़रह़ येह गुमान रख कर **नमाज़** पढ़े कि अब कभी दोबारा **नमाज़** नहीं पढ़ सकेगा। (جامع صغیر، ص50، حدیث:716)

नमाज़ के वक़्त अपनी हर शै को अल वदाअ़ कह दो !

ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी उस शख़्स की त़रह़ **नमाज़** पढ़ो जो अपने नफ़्स को रुख़्सत करता हुवा, अपनी ख़्वाहिशात से कूच करता हुवा और अपनी ज़िन्दगी को अल वदाअ़ कहता हुवा अपने मौला की त़रफ़ जा रहा हो। (احیاء العلو، 1/205)

ह़ज़रते बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह मुज़नी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : अगर तुम येह चाहते हो कि तुम्हारी **नमाज़** तुम्हें नफ़्अ़ पहुंचाए, तो (**नमाज़** शुरूअ़ करने से क़ब्ल) येह कहो : शायद में इस **नमाज़** के बा'द दोबारा **नमाज़** नहीं पढ़ सकूंगा। (قصر الامل مع موسوعہ لامام ابن ابی دنیا، 3/328، رقم:104)

येह मेरी ज़िन्दगी की आख़िरी नमाज़ है

नमाज़ के वक़्त मौत की याद की जाए और येह ज़ेह्न बनाया जाए कि येह मेरी ज़िन्दगी की **आख़िरी नमाज़** है। **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "अपनी **नमाज़** में मौत को याद करो क्यूं कि जब कोई शख़्स अपनी **नमाज़** में मौत को याद करेगा तो वोह ज़रूर उ़म्दा अन्दाज़ में **नमाज़** पढ़ेगा और उस शख़्स की त़रह़ **नमाज़** पढ़ो जिसे उम्मीद न हो कि वोह दूसरी **नमाज़** अदा कर सकेगा।" (کنز العمال، 7/212، حدیث:20075)

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक्तबतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पैम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पैम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

फ़ेहरिस्त

मज़ामीन	सफ़ह़ा नम्बर	मज़ामीन	सफ़ह़ा नम्बर
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	बन्दा रक्अ़तें क्यूं भूलता है ?	9
डिज़ाइन वाली चादर में नमाज़ ?	1	अज़ान में शैत़ान दूर करने की	
लिबास का असर दिल पर होता है	2	तासीर है	9
डिज़ाइन वाले लिबास में नमाज़ जाइज़ है	3	नमाज़ में भूली हुई बातें	
नए ना'लैने शरीफ़ैन	3	याद आ जाती हैं	10
सोने की अंगूठी	3	शैत़ान ने ख़ज़ाने का	
सोना मर्द के लिये ह़राम	4	पता बता दिया ! (वाक़िआ़)	10
सोने की अंगूठी फेंक दी (वाक़िआ़)	4	रक्अ़तों की गिनती भूल जाए	
परिन्दे की मह़ब्बत का वबाल (वाक़िआ़)	4	तो क्या करे ?	11
परिन्दे पालना कैसा ?	5	वोह इन्टरनेट का	
सह़ाबी ने बाग़ सदक़ा		ग़लत़ इस्ति'माल किया करते थे	12
कर दिया (वाक़िआ़)	5	दुन्या से जाने वाले की	
ताबेई़ ने बाग़ सदक़ा कर दिया (वाक़िआ़)	6	त़रह़ नमाज़ पढ़े	13
दोस्त की नाराज़ी का ख़ौफ़ मगर....	6	नमाज़ के वक़्त अपनी हर शै	
ख़ुशूअ़ वाली नमाज़ ग़म दूर करती है	7	को अल वदाअ़ कह दो !	13
रोज़ी में बरकत का मज़बूत़ ज़रीआ़	8	येह मेरी ज़िन्दगी की आख़िरी	
बड़ी उ़म्र पाने के 10 अस्बाब	8	नमाज़ है	14

अगले हफ़्ते का रिसाला